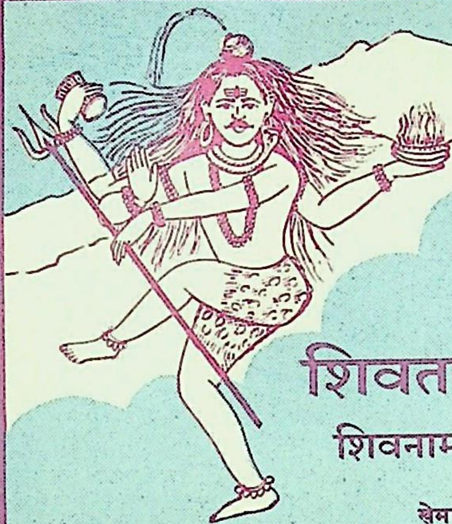


शिवताण्डवस्तोत्रम्

शिवनामावल्यष्टकसहितम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

शिवताण्डवस्तोत्रम्

शिवनामावल्यष्टकसहितम्

******

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई—४०० ००४.

संस्करण : अप्रैल २०१०, सम्वत् २०६७ मूल्य : रुपये ५ मात्र ।

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.
Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com
Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press,
66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

श्रीगणेशाय नमः

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।१।।
जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी–
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।।२।।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दृगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।।३।।
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरास्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।।४।।

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गया
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं
महः कपालि सम्पदे सरिज्जटालमस्तु नः ।।५।।
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर–
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रिये चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।६।।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्जज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।।७।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहुनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्दरः ।।८।।

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ।।९।।
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।।१०।।

जयत्यदभ्रविभ्रम (द्) भ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिं धिमिं धिमिं ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।।११।।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्टयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।।१२।।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्।
विलोललोललोचनाललामभाललग्नकं
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदासुखी भवाम्यहम्।।१३।।
निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियः परंपदं तदङ्गजत्विषां चयः।।१४।।

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनाऽवहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणा जगज्जयाय जायताम् ।।१५।।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां मदगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं प्रसादसमये प्रददाति शम्भुः ।।१६।।

इदं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नाऽन्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ।।१७।।

इति श्रीरावणविरचितम् शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्

*****

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ।।१।।

*****

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।

शिवनामावल्यष्टक प्रारम्भः

श्रीगणेशाय नमः

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो ।।
भूतेश भीतिभयसूदनमामनाथं
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ।।१।।
हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप ।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसारदुःख० ।।२।।

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व ।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसारदुःख० ।।३।।
हे विश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश ।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ संसारदुःख० ।।४।।
वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमख काल विभो गणेश ।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ संसारदुःखग० ।।५।।

श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्माङ्गरागनृकपालकलापमालसंसारदुःखग० ।।६।।
कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापहशक्तिनाथ संसारदुःख० ।।७।।
विश्वेश विश्वभवनाशितविश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश।
हे विश्ववन्द्य करुणामय दीनबन्धो संसारदुःख०।।८।।

गौरीविलासभवनाय महेश्वराय
पञ्चाननाय शरणागतकल्पकाय।
सर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।९।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवनामावल्यष्टकं सम्पूर्णम्

*****

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
११/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वीं खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

